①.

LASKI'S VIEWS ON PLURALISM

लास्की निरंकुश/निरपेक्षवाद/निरपेक्षवादी/Absolutism राज्य के सिद्धांत के खिलाफ थे। लास्की मानव स्वतंत्रता के समर्थक थे उन्होने निरंकुश राज्य के विरोध मे उदारवादी राज्य के समर्थक थे। उन्होने 20 वी सदी मे हो रहे ~~बदला~~ बदलाव की प्रभाव को समझते हुये उदारवादी लोकतंत्र एव समाजवादी लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुसार राजनीतिक, सामाजिक एव आर्थिक बदलाव का समर्थन किया। लास्की 20 वीं सदी में बदलते राजनीति सोच एव उसकी जरुरत को समझते हुये जॉन ऑस्टिन के निरंकुश संप्रभुतावादी सिद्धांत की आलोचना करते हुये बहुलवादी सिद्धांत का समर्थन किया।

ऑस्टिन की सिद्धांत की आलोचना
CRITICISM OF AUSTIN THEORY

ऑस्टिन के सिद्धांत के अनुसार ~~[illegible]~~ समाज/राज्य मे एकमात्र शक्ति का स्रोत होगा जो सर्वव्यापी, असीमित होगा। समाज/राज्य मे उससे ऊपर कोई भी संस्था या शक्ति का स्रोत नही होगा। वह शक्ति निरंकुश होगा। जिसे संप्रभु शक्ति कहा जायेगा। ~~[illegible]~~ ऑस्टिन के इस सिद्धांत को बहुलवादी विचारकों ने कानूनी, दार्शनिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, प्रशासनिक एव राजनीतिक आधार पर आलोचना की। ~~[illegible]~~ लॉस्की ~~[illegible]~~ ने खासकर ऐतिहासिक, कानूनी एव राजनीतिक आधार पर आलोचना की।

लॉस्की की आलोचना का ऐतिहासिक आधार :-

(2)

लॉस्की की आलोचना का कानूनी आधार

लॉस्की ने ऑस्टिन की कानूनी संप्रभुता के मुख्य ~~विशेषताओं~~ विशेषताएं निरंकुश (Absoluteness), अविभाज्य (Indivisibility) अविच्छेद्य (Inalienable), सर्वव्यापी (All-Comprehensive) आदि की आलोचना की। लॉस्की की आलोचना का तीन मुख्य आधार है।

प्रथम - लॉस्की का मानना था कि राज्य सीमीत होता है असीमीत नही, State is Limited, not unlimited.

दूसरा - State is not merely a legal order. राज्य केवल एक कानूनी व्यवस्था नही है।

तीसरा - Law is not the command of the Sovereign. कानून संप्रभु का आदेश नही है।

लॉस्की लिखते है कि कोई भी संप्रभुता कभी भी/किसी भी देश मे असीमीत शक्ति धारण नही करता। लॉस्की ऑस्टिन की संप्रभुता के कानूनी परिभाषा को अस्वीकार करते है कि संप्रभु शक्ति कानून बनाने में भी असीमीत शक्ति धारण करता है। ब्रिटेन का उदाहरण देते हुये ~~ऑस्टिन~~ लॉस्की लिखते हैं कि ब्रिटेन का राजा ऑस्टिन के संप्रभुता का सबसे उत्तम उदाहरण है लेकिन व्यवहार में सबको पता है कि वहाँ का संसद सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए ऑस्टिन का निरंकुश संप्रभु शक्ति सिर्फ एक कोरी कल्पना मात्र है। असल व्यवहार मे सच्चाई ऐसी नही है। वर्तमान मे संघीय राज्य (Federal state), तथा उन देशों में जहाँ नागरिको का मूल अधिकार (Fundamental Rights)

लॉस्की का मानना था कि निरंकुश संप्रभुता का सिद्धांत की उत्पत्ति एक विशिष्ट समय में विशिष्ट स्थिति में हुई। निरंकुश संप्रभु राज्य की कल्पना चर्च और राज्य के बीच श्रेष्ठवाद की लड़ाई के चलते हुई। निरंकुश राज्य की संकल्पना की उत्पत्ति धर्मनिरपेक्ष राज्य के ऊपर धर्मनिरपेक्ष राज्य की श्रेष्ठता स्थापित करने के लिये हुई। इसको बोदाँ (Bodin) होब्स (Hobbes) (Rousseau) रूसो आदि की रचनाओं से आसानी से समझा जा सकता है।

लॉस्की के अनुसार इतिहास में कभी भी किसी भी काल में निरंकुश संप्रभु शक्ति (Absolute Sovereignty) के उदाहरण को नहीं देखा जा सकता। हमेशा से राज्य के शक्ति के अंग एवं उसका संचालन (exercise) पर कुछ सीमाएं एवं नियंत्रण रही है। अतः इतिहास में कभी भी निरंकुश राज्य का उदाहरण नहीं है। या ऐतिहासिक अनुभव यह सिद्ध करता है कि विश्व समाज कभी भी एक निरंकुश शक्ति का समर्थन नहीं करता। लॉस्की का मानना था कि 16 वीं शताब्दी का दौर जिसकी विशिष्ट परिस्थितियों के चलते Absolute Sovereignty (निरंकुश संप्रभुता) के सिद्धांत का प्रतिपादन हुआ, वह दौर अब गुजर चुका है। ये 'समाज अब उदारवादी, समाजवादी, बहुलवादी परंपरा को मानने वाला 20 वीं सदी में आ चुका है अतः अब निरंकुश संप्रभु राज्य की संकल्पना की जरूरत नहीं।

लॉस्की एवं बहुलवादी विचारक ऑस्टिन के निरंकुश संप्रभुता (Absolute Sovereignty) के विचार को (Organisation and the State) संगठन एवं राज्य के आधार पर भी आलोचना की है। बहुलवादी विचारकों का मानना है कि ऑस्टिन एवं अन्य निरंकुश संप्रभुता के सिद्धान्त को प्रतिपादित करने वाले विचारक समाज, सामाजिक संगठन, और राज्य रूपी संस्था के बीच के अंतर को नही समझा। लॉस्की का मानना है कि राज्य का अपना एक सीमित क्षेत्र है, समाज एवं नागरिकों के सभी क्रिया-कलाप, सभी आयामों को राज्य के परिधि में समाहित नहीं कर सकते। राज्य एवं समाज के संगठन एवं कार्य करने के तरीकों में भी अलग है। राज्य एवं समाज का संघीय ढाँचा भी अलग है और राज्य एवं समाज दोनों में परस्पर सम्बंधों को समझे बिना राज्य अपने कार्यों एवं कर्तव्यों का संपादन नही कर सकता। लॉस्की के अनुसार समाज व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास करने में सहायक है और राज्य एक यंत्र (Instrument) है जो समाज की व्यवस्था को बनाये रखते हुये नागरिक/व्यक्ति की सेवा करता है अतः राज्य की परिधि समाज से छोटा, सीमित एवं अलग है।

CRITICISM OF THE VIEWS OF LASKI
लॉस्की के विचार की आलोचना

- लॉस्की अपनी किताब में खुद ही स्वीकार करते है कि उनका ~~विचार~~ बहुलवादी विचार उदारवादी राजनीति एवं सामाजिक मान्यताओं पर आधारित था।

प्राप्त है वहाँ ऑस्टिन की निरंकुश संप्रभुता (Absolute sovereignty) की अवधारणा सिर्फ अब कोरी कल्पना मात्र है। ऐसे देशों में संप्रभुता हमेशा सीमीत एवं नियंत्रित है।

लॉस्की ऑस्टिन की राजनीतिक संगठन के सिद्धांत की भी आलोचना करते हैं। आधुनिक राज्य के सिद्धांत में निरंकुश शक्ति ~~किसी~~ ~~के~~ व्यवहार में कहीं भी स्थापित नहीं है। आधुनिक राज्य की परिभाषा में स्पष्ट है कि <u>the will of the State, is the will of People</u>, <u>the will of the Government is the will of citizens.</u> राज्य की इच्छा, वास्तव में, राज्य की जनता की इच्छा है, सरकार की इच्छा, वास्तव में उसकी नागरिकों की इच्छा है। सरकार का स्वरूप, राज्य की शक्ति जनता की इच्छा से नियंत्रित है। अतः आधुनिक राज्य की परिभाषा में ~~कोई की भी~~ किसी भी प्रकार का असीमीत, स्थायी, अनियंत्रित शक्ति की कल्पना करना अनुचित है। यह व्यवहार में संभव नहीं।

लास्की ~~का~~ असीमीत बाहरी संप्रभुता (Unlimited External Sovereignty) की भी आलोचना करते हैं। लास्की लिखते हैं कि आधुनिक राज्य की परिभाषा के अनुसार यह सत्य है कि राज्यों/देश की सीमाएँ अलग-अलग है लेकिन व्यवहार में यह ~~सत्य नहीं~~ सभी राज्य एक-दूसरे से जुड़े हुये हैं, एक-दूसरे पर निर्भर है। अतः वर्तमान वातावरण में निरंकुश बाहरी संप्रभुता ~~का~~ की विचार अव्यवहारिक है। बहुत से ~~वैश्विक~~ वैश्विक मुद्दों पर सभी राज्य एक दूसरे पर निर्भर है। वर्तमान समय में संप्रभुता का विचार नगण्य हो गया है।

- लॉस्की की बहुलवादी विचार की कमजोरी सामाजिक विकास के वैज्ञानिक नियम को न समझने के चलते थी। अर्थात लॉस्की सामाजिक विकास की वैज्ञानिक नियम को बेहतर ढंग से समझ नहीं पाये।
- समाज में वर्ग एवं जाति को समाप्त किये बिना बहुलवादी संप्रभुता को न स्थापित नहीं किया जा सकता और न ही उसके उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।
- जब समाज के कारीब, मजदूर आदि का समान प्रतिनिधित्व स्थापित नहीं होता, समाज एक वर्ग-विहीन, जाति विहिन समाज नहीं बनता बहुलवादी संप्रभुता स्थापित नहीं हो सकती। लॉस्की इस बात को समझने में असफल रहे।
- लॉस्की की इन कमियों के चलते उनका बहुलवादी विचार सिर्फ काल्पनिक, अनुपयोगी साबित हो हुआ।

धन्यवाद